नारी की सामाजिक स्थिति

डॉ0 साहब सिंह
मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, गच्चीबौली, हैदराबाद

सारांश

आम तौर पर सभी देशों कम व बेश औरत की हैसियत एक जैसी थी। कुछ जगह इसपर सख्त पाबन्दियां लागू थी और चंद जगह कम थीं। औरतों की समाजी अहमियत विभिन्न जमानों में वक्त, हालात और माहौल के साथ परिवर्तित होती रही।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
डॉ0 साहब सिंह,
''नारी की सामाजिक स्थिति''
शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 114–139
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No.18 (SM 456)

प्रस्तावना

बीसवीं सदी ने औरतों को गुलामी, जहानत और अंधकार से मुक्ति दिलायी इसमें षक नहीं कि आज औरत को करीब करीब सारी दुनिया में मर्द के बराबर अधिकार हासिल हैं। अगर इतिहास पर नज़र डाली जाये और प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता और इल्मी एवं अदबी किताबों का अध्ययन किया जाये तो इस बात का अंदाजा होता है कि इस प्रकार के अधिकार हासिल करने की जदोजहद प्राचीन समय से जारी है और विभिन्न दौरों और विभिन्न देशों में इनके कुछ पहलुओं पर कामयाबी से अम्ल किया जा चुका है। अफलातून की 'रियासत' इस बात का बहुत बड़ा सबूत है। उसने उस वक्त औरतों के अधिकार को माना जबकि दुनिया के कदीम देश अधिकार के सही अर्थ से भी परिचित नहीं थे।

यूनान की संस्कृति एवं सभ्यता दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यता कही जा सकती है। जिस वक्त दुनिया में फलस्फा इल्म व अदब के नाम से (हिन्दुस्तान को छोड़कर) कोई वाकिफ नहीं था। यूनान में यह चीजें अपने मेराज–ए–कमाल को पहुँच चुकी थीं। यूनान की कदीम किताबों में अफलातून की ''रियासत'' दुनिया के इल्म व अदब एवं सभ्यता व मआशरत, तमद्दुन और सियासयात में बहुत अहमियत रखती है। इस किताब से हमें यूनान की सामाजिक, आर्थिक, सभ्यता एवं एकता और विकास का अनुमान होता है। यद्यपि अफलातून का युग यूनान का वह जमाना था जब उसकी उन्नति का सूरज डूब रहा था।

प्राचीन समय में षायद अफ्लातून पहला व्यक्ति था जिसने औरतों को एक सीमा तक पुरूषों के बराबर अधिकार दिये हैं। अपनी रियासत में उसने एक जगह लिखा किः–

''मर्दों की वह हैसियत होनी चाहिए जो गल्ले में महाफिज़ व निगरां कुत्तों की होती है।''[1]

पहले प्रत्येक मर्द को औरतों पर फोकीयत दी गयी है और उनकी औरतों का महाफिज निगरां बनाया गया है। जैसे उसकी ''रियासत'' आला और अदला दो वर्गों में विभाजित है। वह आला या फलस्फी तबके को तमाम मराआत और मसावयाना हकूक देने को तैयार है। लेकिन इसके मुकाबले में अदना दर्जे के साथ कोई रियायत नहीं करता। उसकी निगाह सिर्फ फलस्फी तबके पर रहती है। वह अपनी रियासत में आला तबके की औरतों में अच्छी तालीम और मर्दों के बराबर आजादी देता है। इसके ख्याल में वह सभी योग्यताएं या महत्व जो धर्म में होती हैं। कुदरत की तरफ से औरत को भी मिलती है। इसी सूरत में जानिब दाराना बर्ताव को ठीक नहीं समझता और कहता हैः–

''अगर औरतों और मर्दों के फराईज एक से हैं तो उनकी तालीम और परवरिश भी एक सी होनी चाहिए।''[2] में औरतों की समस्याओं पर विचार–विमर्श करते हुए अफलातून ने लिखा है किः–''कोई ऐसी काबिलीयत नहीं जो औरतों में बहैसियत औरत होने के और मर्द बहैसियत मर्द के मौजूद होती है। कुदरत की देन दोनों में यकसां बनती है।''[3]

अफलातून का ख्याल था कि इंसान बीवी बच्चों और खानदानी झगड़ों में फँस कर अपने कौमी और मुल्की फराईज को भूल जाता है। इसलिये उस निश्चित किया था कि मुहाफिज और शासकों की अलग अलग बीवियाँ नहीं हुआ करेंगी मेहनतकसी एक के साथ नहीं बट सकेगी और वह किसी एक बच्चे को अपना बच्चा नहीं कह सकेगी। इसलिए सभी बच्चे उनकी मुहब्बत और सफक्त जो पूरे मुल्क पर मुनहसिर होगा अफलातून ने लिखा है।

''हमारे मुहाफजीन की बीवियाँ मुष्तर्क हों वालिदैन अपने बच्चों को न पहचानें न बच्चे वालिदैन को ..... हमारे शहर में औरतों और बच्चों का मुशतर्क होना रियासत के लिए सबसे बड़ी खूबी का बाअस होगा।''[4]

अफलातून एक तरफ तो मर्दों के बराबर औरतों को तालीम हासिल करने और जंग में शरीक होने का अधिकार देता है तो दूसरी तरफ उनकी घरेलू जिन्दगी की सभी लताफतें और हुस्न, उनके बच्चों का प्यार छीन लेता है। इस तरह औरत को जो दूसरी हैसियत है। ''रियासत'' में अफलातून ने पेश की है। वह औरत के लिए किसी भी प्रकार से बेहतर नहीं कही जा सकती और शायद उसकी रियासत की असफलता की सबसे बड़ी वजह बनी इसका अम्ल में आना असंभव है।

यूनान के शहर स्पार्टा में सबसे ज्यादा आजादी हासिल औरतों को थी। स्पार्टा के मशहूर मुफ्ती लाईकरगिस ने कानूनी रूप में औरतों को काफी महत्व दिया है। इसके मुकाबले ऐथेंस में औरतों पर सख्त पाबंदियां लागू थीं जो यूनान किसी सूबे में नहीं थी और सभी राज्यों के मुकाबले में स्पार्टा की औरतों की समाजी हालत बेहतर थी। यहाँ लड़कियाँ बेपर्दा रहती थीं। बड़े ज़ौक व शौक से संगीत की शिक्षा प्राप्त करती थीं। लेकिन यहाँ भी और राज्यों की तरह फलस्फा मंतिक और दूसरे अलूम के दरवाजे औरतों पर बंद थे।

कदीम यूनान में औरतों की समाजी हालत बहुत गिरी हुई थी। शहर पूरे तौर पर अपनी बीवी पर फोकियत रखता था यूँ कहिये उसकी मलकियत थीं। बल्कि बतौर तोहफा अपनी बीवियों को अपने मित्रों और प्यारों को पेश कर सकता था और उसकी फरमाबरदारी औरत पर वैसे ही लागू थी जैसे कि अपने शौहर की। औरत को तलाक लेने का भी अधिकार नहीं था। एक अरसे बाद यूनानी औरतों ने तलाक लेने का अधिकार प्राप्त किया और इसी के साथ मेहर का प्रचलन भी शुरू हुआ। तलाक की सूरत में मर्द के लिए यह जरूरी था कि वह औरत का मेहर इजाफे के साथ अदा करे।

प्राचीन मिस्र में भी स्पार्टा की तरह औरतों की समाज में ऊँचा स्थान था। वहाँ विरासत का सिलसिला लड़के की तरफ मंतकिल होने की बजाये सबसे बड़ी लड़की की तरफ मुंतकिल होता था। यही वजह है कि मिस्र की तहरीरों में किसी न किसी सूरत में मां की प्रशंसा की गयी है।

मिस्र के आखरी दौर में औरतों के वह अधिकार जो समाजी रूप में उन्हें हासिल

थे। कम होना शुरू हो गये। अर्थात औरतों में अपने अधिकारों की सुरक्षा की चिन्ता आरम्भ हुई तो उन्होंने शादी के लिये विभिन्न षर्तें रखीं। यह कहना बेजा न होगा कि निकाहनामा की शुरूआत सबसे पहले प्राचीन मिस्र में हुई।

हीरोडेविस के अनुसार प्राचीन मिस्र में सभी औरतों को सभी ऊलूम प्राप्त थे। सभी कार्यों में औरतें मर्दों के साथ–साथ नज़र आतीं थीं खेती की षुरूआत औरत ने की। सफरनामे में दक्षिण अफ्रिका में एक जगह लिखा हैः–

''औरत ने यही नहीं कि सहराई पैदावार से गिजा का काम लिया हो बल्कि उसने तुख्म रेजी भी की और इस तरह अव्वलीन जराअत की बुनियाद डाली।''[5]

कदीम देशों के संस्कृति एवं सभ्यता के केन्द्रों के अलावा दूसरे विभिन्न देशों में औरत का दशा करीब एक जैसी थी। सीमरपों की संस्कृति एवं सभ्यता काफी सभ्य थी। इसके यहाँ एक ही शादी का रिवाज था। कनीजें रखना साधारण बात थी और दोनों के अधिकारों में फर्क था। नाबल और अशूरया के समाज में मर्दों को यह हक हासिल था कि वह जिस वक्त चाहे तलाक अपनी बीवियों को दे दें लेकिन औरतें इस अधिकार से वंचित थीं। मर्द को परिवार पर पूरा अख्तियारात प्राप्त थे। वह बीवी और बेटी, बेटे किसी को भी किसी मालदार आदमी के और बाप को यह हासिल था। बल्कि चंद ऐतिहासिक हवाले के अनुसार पति और बाप को यह अधिकार प्राप्त था कि औरतों की कुर्बानी भी दे सकते थे। औरत की निजात सिर्फ षौहर की ताबेदारी में थी। षौहर चाहे जितनी सख्ती करे लेकिन औरत को सहन करनी पड़ती थी।

प्राचीन चीन में भी औरत की समाजी हैसियत बाबुल और अषूरया जैसी ही थी कफूयूशिस ने लिखा किः–

''मर्द हाकिम है। उसका काम हुक्मरानी और इसका फर्ज इताअत है। ..... औरत शादी से पहले अपने बाप भाई की फरमांबरदार है। शादी के बाद शौहर की और शौहर के बाद बड़े बेटे की इताअत फर्ज।''[6]

चंद हालात में मर्दों को एक सौ तीस (130) औरतें तक करने अधिकार या ऐसे हालात में ज्यादा शादियां करने को मना किया गया था। लेकिन लौंडिया रखना जायज था। लोंडियों की समाजी हैसियत बीवियों से कमत्र थी। मगर उसकी औलाद हासिल बीवी की औलाद के बराबर हक प्राप्त थे।

बनी इसराईल में लड़कों की पैदाईश पर खुशियां मनायी जाती थीं। मगर लड़कियों की पैदाईश पर खुशी नहीं मनायी जाती थी। क्योंकि समाज में औरतों को हकीर और पस्त समझी जाती थी।

प्राचीन दौर में भी औरतों की सामाजिक हैसियत अच्छी नहीं थी। यहाँ भी औरतों पर मर्दों को प्रधानता हासिल थी। हर मामले में मर्दों का दबदबा कायम था। लड़कियाँ बाप की मलकियत थीं और वही उनकी शादी ब्याह की समस्या को निश्चित करता था और इन

मामलों में औरत का कोई अधिकार प्राप्त नहीं था।

प्राचीन अरब में भी इस्लाम प्रकट होने से पूर्व औरत की समाजी हालत बहुत खराब थी। लड़की पैदाईष को ही बुरा समझते और पैदा होते ही मार डालने और फिर जिन्दा दफन कर देते थे क्योंकि एक कबीला किसी दूसरे कबीले को अपनी लड़की देकर वह कबीला हमेशा बेचारा हो जाता क्योंकि उनकी लड़की वहाँ है। इस बात से ही उनकी तुंदमिजाजी और सख्त गीरी साबित करने के लिये काफी है। वह लड़की को पैदा होते ही दफन कर देना पसंद करते थे लेकिन झुकना और इंकसारी उनके लिये नाकाबिले बर्दाश्त की बात थी। कुछ चीजों से यह भी पता चलता है कि खानदान के अन्दर औरतों की इज्जत की जाती थी और उनकी अहमियत भी थी। अपने खानदानी मामलात में मशविरे देती थीं यहाँ तक कि कबीलों की जंगों में उनकी राय मषवरे लिये जाते थे और जंगों के अन्दर की जिन्दगी में हाकिमाना हैसियत रखती थीं। कुछ औरतें भी जो खाना बदोशी की जिन्दगी गुजारती थीं। अपने खानदानी मामलात में अहमियत रखती थीं और विभिन्न कामों में मर्दों का हाथ बटाती थीं। नियाज फतेहपूरी ने लिखा है कि:—

''सहराये अरब के बदु जब रेगिस्तान में चरागाह या चश्मे की तैलाश की गर्ज से अपना जाये कयाम बदलना जरूरी समझते थे तो उनका काम सिर्फ यह होता था कि वह यूँ ही खाली हाथ अपने उँटों को लेकर चल दें। फिर अब यह औरत का काम होता है कि वो खेमा को उखाड़े, सारा सामान उखाड़े, सामान इकट्ठा करके और ऊँटों पर लादकर ले जाये। औरतें इस काम को इस उदर सरअत के साथ अंजाम देती हैं कि मर्दों का काफिला दूर नहीं पहुँचता कि ये भी सारा असबाब लेकर उनसे मिल जाती हैं।''[7]

अरब में समाजी हैसियत न होते हुए भी यहाँ औरतें मर्दों का हाथ बटाती थीं। इनके काम काज में हिस्सा लेती थीं और चंद औकात इस जंगों में इनको मशवरे भी देती थीं।

आम तौर पर सभी देशों कम व बेश औरत की हैसियत एक जैसी थी। कुछ जगह इसपर सख्त पाबन्दियां लागू थी और चंद जगह कम थीं। औरतों की समाजी अहमियत विभिन्न जमानों में वक्त, हालात और माहौल के साथ परिवर्तित होती रही।

प्राचीन देशों के अध्ययन के पश्चात हिन्दुस्तान की प्राचीन इतिहास की रोशनी में औरत का जाईजा लेते हैं।

(अ) प्राचीन हिन्दुस्तान में स्त्री

हिन्दुस्तान की सभ्यता भी यूनान की तरह प्राचीन और महान है। हिन्दुस्तान में ईल्म व अदब, तहजीब व तमद्दुन, फलस्फा, नजूम व हीयत, अपनी चरम सीमा पर थी। यहाँ एक समाजी और मआशी, व्यवस्था थी और उसके अनुसार समाज में काम के लिहाज से विभिन्न वर्गों में विभाजित थे। जिसमें मर्द और औरत का अलग अलग समाजी महत्व था।

प्राचीन हिन्दुस्तान की सभ्यता में वेदों के द्वारा यह मालूम होता है कि यहाँ औरतों की बहुत अहमियत थी। वैदिक दौर में औरत का समाजी मान व सम्मान काफी ऊँचा था। हालाँकि मजहबी और समाजी तरक्कियों के बीच में कुछ दुश्वारियाँ भी थीं लेकिन इसके बावजूद भी औरतों ने शिक्षा प्राप्त की और वक्तन फोक्तन अपनी ईल्मी योग्यता और अपने फनून का प्रदर्शन किया है और इस जमाने में औरतें तालीमी ऐतबार से मर्दों के बराबर ही नहीं बल्कि ऋग्वेद में ऐसे भजन भी लिखे हैं जो औरतों से मंसूब है। जिन्हें रिषिका और ब्रह्म वेदनी कहा जाता है। राधा कमल मुकरजी ने लिखा है किः–

''ब्रह्म वेदनी ब्रह्मचर्या की तालिब ईल्म हुआ करते थे। औरतों को भी इस ईल्म को हासिल करने की इजाजत थी। रिज्ञुवेद (V.7.0) में इसका हवाला मिलता है कि नौजवान लड़कियाँ अपनी तालीम ब्रह्मचर्या की हैसियत से मुकमिल करती थीं और तालीम की तकमील के बाद जिस प्रकार नदी समुद्र में मिल जाती है। वह अपने शोहरों से मिल जाती थीं।''[8]

हजारों साल पहले औरत को शौहर के बराबर तालीम हासिल करने और मज़हबी त्योहारों रस्मों रिवाज में शरीक होने की आजादी थी। ऋग्वेद में बहुत सी जगहों पर औरत के बारे में इजिहार किया गया है। मजहबी मामलात में औरत को करीब करीब मर्द के बराबर अधिकार प्राप्त थे इससे सहजतापूर्वक अनुमान लगाया जा सकता है कि उस वक्त समाज में औरतों का स्थान सर्वश्रेष्ठ था। ऋग्वेद मंत्र (V-6) में कहा गया है किः–

''बहुत सी औरतें न मर्दों के मुकाबले में बदरजे बेहतर और मुस्कली मिजाज हैं।''[9]

प्राचीन भारत के वैदिक के जमाने में फलस्फयों की एक परिचर्चा हुई थी। यह परिचर्चा अपने तरीके की पहली कांफ्रैस थी। जो वेधा के राजऋषि जंग के यहाँ हुई थीं। जिसमें विभिन्न राजऋषि फलस्फयाना विचारों एवं नजरियों के रखने वाले और विभिन्न धर्मों के विचारों एवं मतमतान्तरों के लोगों ने बाजाब्ता तहरीरी शक्ल दी और भिन्न भिन्न राय विचारों से असहमती को दूर करने की कोशिश की गयी।

''इस कांफ्रैंस की सबसे बड़ी अहमियत यह थी कि इसमें एक फलस्फी औरत ब्रह्म वेदनी गार्गी व शाकुन्वी'' (VDNI VA CHAKANAVI)[10] सिर्फ शरीक ही नहीं हुई थीं बल्कि उन्होंने विचार विमर्श में भाग लिया और बड़ी दिलेरी और बहादुरी से व्याख्यान की थीं। इससे यह साफ तौर पर पता चलता है कि उस वक्त औरतों की आजादी काबिले रिश्क थीं।

मैडम जेड. ऐ रागोडन ने लिखा है कि कुछ विशेष अवसरों पर औरतों की उपस्थिति उस जमाने में जरूरी समझी जाती थी। जब किसी शव की आखरी रसूम की जाती थी। ऐसे अवसर पर सबसे पूर्व लाश पर घी और तेल डालने के लिये सुहागिन औरतों को बुलाया जाता था। वह उस मुत्बर्रक मुकाम पर जहाँ की लाश रखी जाती थीं और आखरी रसूम अदा करने के लिये उस पर घी और तेल और खुशबूयें डालती थीं। पुजारी ऐसे मौके पर मंत्र पढ़ते थे।

''यह औरतें जो कि बेवा नहीं हैं बल्कि मौजिज शहरियों की बीवियां हैं उन्हें पहले तेल और घी लेकर आने दो उनके ये आंसूओं और बे गमवालियों को जो लिबास फाखए से मुज्जयन हैं। मौत के मसकन में जाने दो।''[11]

समाज में औरतों की अहमियत व फोकीयत थी। इस बात से नुमायाँ तौर पर जाहिर होती है। इसमें कोई शक नहीं कि शुरूआती दौर में औरतों को बदतरीन प्राणी समझा जाता था मगर पवित्र किताबें इस बात का प्रमाण देती हैं कि सामूहिक रूप में प्राचीन भारत में औरतों का दर्जा मर्दों के बराबर था। औरतों ने इस जमाने के फनूने लतीफा फलस्फा और शेरोअदब के मैदान में काफी तरक्की की थी और संगीत में उन्हें आम तौर पर कमाल व दक्षता हासिल थी।

ऋग्वेद में विभिन्न स्थानों पर इसका जिक्र मिलता है कि औरतें धार्मिक जलसों में गाया करती थीं और गाने के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के साजों का भी बखुबी प्रयोग करती थी। वाक (Vac) वैदिक युग की प्रसिद्ध कवित्री थी जिसकी कृतियां वेद और पुराण में शामिल हैं। इसके अलावा अपाला, घोषा, इंद्राणी विश्वादराव इत्यादि ने बहुत से भजन लिखे जो वेदों में शामिल हैं। उपनिषदों से पता चलता है। मैत्री (Maitry) और उसकी सहेलियों का जिक्र है। संगीत और नृत्य में प्रवीणता प्राप्त थीं।

प्राचीन औरतों का समाजी महत्व और धार्मिक श्रेष्ठता के बारे में नियाज फतेहपुरी ने लिखा हैः–

''यह अमर है कि जमाना कदीम में औरत का वजूद तक मुनहम बालिशान वजूद था। और वह कायनात में मर्द के दोष बदोष काम करने की अहल थी। मुखतलिफ जराय से साबित होता है। सबसे पहले जो चीज इसके सबूत में पेश की जा सकती है। वह इकदाम आलम का इल्मुल्लसनाम है। कोई कौम ऐसी नहीं जिसके इल्मुलसनाम में दो चार देवहों का नाम न पाया जाता हो और यूनान बरमा के इल्मुल्लसनाम में तो अंसर गालिब देवियों का ही है। दौलत षोहरत, हुस्न षेअर, मौसीकी, जिस्म, रूह, जराअत इत्यादि सब देवियों ही है। से मंसूब है। जिससे मालूम होता है कि यह सारी बातें सिर्फ औरतों की वजह से कायम हुई यहाँ तक कि उनको देवी करार दे दिया .....

हिन्दुओं के इलामुल्लसनाफ में लक्ष्मी देवी से कौन वाकिफ नहीं है। अगर इसकी यह ताबिल की जाये कि औरत को जमाना कदीम में एक बेबहा दौलत या दौलत को औरत की मेहनत का नतीजा समझा जाता था तो खिलाफे महल न होगा।''[12]

वैदिक का जमाना कदीम में मर्द और औरत को बराबर के अधिकार हासिल थे। उनकी बराबरी का यह आलम था कि औरतें किसी की गुलाम नहीं थीं उनपर षौहर के अलावा उनके भाई मां बाप की इताअत भी फर्ज नहीं थी। किसी भी रिश्ते में लड़की की मंजूरी या रजामंदी प्राप्त कर ली जाती थी। कोई ऐसी सूरते हाल होती कि एक लड़की के कई ख्वास्तगार हुये तो लड़की उनमें से किसी को चुन लेती थी। यह रस्म ब्रह्मणी युग तक कायम रहीं चुनाव की इस

रस्म को स्वयंवर कहा जाता था। लड़कियों के साथ उनके बाप के घर में भी मुहब्बत और व्यक्तित्व का बर्ताव किया जाता था और भाईयों को बहनों का रक्षक समझा जाता था।

प्रो० इंदिरा ने लिखा कि औरत धीरे धीरे समाजी जिन्दगी में अपना वकार खो रही थी और वह मर्द की ईच्छाओं को पूरा करने का सिर्फ एक साधन मात्र बनकर रह गयी थी। वह आजादियां तो किसी वक्त औरतों को प्राप्त थीं वह महदूद होने लगीं थीं जिसके हवाले वैदिक और उससे पहले के अदब में मिलते हैं। एक शौहर का ब्यान है कि खुदा ने उसकी बीवी को उसकी खिद्मत और तस्कीन के लिये दिया है। वह आगे कहता है कि वह उस के अधीन हैः–

''उपनिषदों में भी औरत सिर्फ एक दिलचस्पी का ज़रिया ही थी। इन पवित्र किताबों के अनुसार दुनिया की शुरूआत में मर्द बिल्कुल तन्हा था और उसके दिल बहलाने की कोई चीज उसकी जिन्दगी में नहीं थी। उसके लिए एक साथी की जरूरत थी जिसे उसने बीवी की शक्ल में पा लिया और जिसने उसकी सभी ख्वाहिशें पूरी कीं और उसके लिये तमाम खुशियां मुहैया कीं।''[13]

औरतों के लिए फनून–जर–लतीफा, शेरों अदब, मजहब और फलस्फे के सभी दरवाजे खुले हुये थे। लेकिन बाद में न सिर्फ यह कि औरतों का समाजी स्तर घट गया बल्कि उनके सभी अधिकार भी छीन लिये गये। औरतों को वेद पढ़ने से रोक दिया गया कैलाश नाथ शर्मा ने लिखा हैः–

''स्मृतियों के रचनाकारों ने औरतों को नासमझ और इखलाक व किरदार का कमजोर बताया है।''[14]

लिखा है कि औरत बगैर मर्द के सहारे के जिन्दगी नहीं गुजार सकती थी। उसका तन्हा वजूद अपनी हिफाजत नहीं कर सकता अर्थात बचपन और जवानी में उनकी सुरक्षा बाप पर होती है और जवानी में षौहर की देखभाल में होती है और बुढ़ापे में उसका लड़का का सहारा बनता है।

''कम उम्र में शादी तो शुरू से ही अच्छी समझी जाती थी लेकिन उपनिषदों के जमाने में इसको कुछ और ज्यादा इसलिए रिवाज दिया गया कि इस प्रकार लड़कियों की शिक्षा की समस्या समाप्त हो जाती थी। कुछ दिनों मामूली सी शिक्षा का सिलसिला जारी रहा लेकिन धीरे–धीरे वह भी खत्म हो गया। शिक्षा का सिलसिला खत्म होने बाद मज़हबी रसूम को अदा करने से वंचित कर दिया गया। नीच जात की औरतों को यूँ भी संस्कार करने की आज्ञा नहीं थी लेकिन इस दौर में तमाम ही औरतों को शूद्र समझ लिया गया था।''[15]

महाभारत में भी दो विभिन्न विचार औरतों के लिये मिलते हैं एक औरत का महत्व और सम्मान और दूसरा बिल्कुल उसके विपरीत है। महाभारत में एक जगह लिखा है किः–

''औरतें न सिर्फ खानगी ज़िन्दगी का मर्कज़ हैं बल्कि वह पूरी समाजी तहज़ीब की

बुनियाद हैं। जिस पर मुल्क के मुस्तकबिल का इंहिसार है।''[16]

उपरोक्त ब्यान से यह साबित होता है कि औरत उस समय समाज में बहुत ही ज्यादा महत्व रखती थी। औरतों के बगैर समाजी ढांचे को पूरा नहीं समझा जाता था बल्कि समाजी तहजीब की शुरूआत का सारा दारोमदार औरत पर ही था। हर दूसरी जगह महाभारत में ही औरतों के बारे में उनके विचार विपरीत थे।

''दुनिया में औरत से ज्यादा गुनाहगार कोई चीज नहीं है। तमाम खराबियों और बुराईयों की जड़ है।''[17]

स्मृतियों उपनिषदों और महाभारत में अक्सर इनके ख्यालात का टकराव होता है। जिसमें न सिर्फ औरत को बुरा कहा गया है बल्कि बदतरीन मखलूक और बुराईयों का भंडार बताया है। अपने जमाने के एक जबरदस्त आलिम मनु थे और जिसके शब्द कानून थे। मनु अपने दर्शनशास्त्र और सयासी गुणों की वजह हिन्दुस्तान के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्तित्व का मालिक था लेकिन औरतों के सम्बन्ध में उसके ख्यालात जिस झुकाव की गुमाजी करते हैं उनपर सामाजिक और समाज पर रोषनी पड़ती है। मनु ने कहाः–

''औरत दुनिया में मर्द को वरगलाती है। उनका ख्याल है कि औरत को अपने घर, जेवरात, ख्वाहिशात, बेमानी, कमीनापन और बुरी आदतों की मुहब्बत होती है। औरतों को धार्मिक किताबें पढ़ने इजाजत नहीं है।''[18]

वैदिक साहित्य के अनुसार विभिन्न जातों में शादी करने के रिवाज का विरोध मनु ने सख्ती से किया और नीची जात में शादी करने के घोर विरोधी थे।

अलबेरूनी के अनुसार ब्राह्मण अपने से नीचे परिवार में षादी को बुरा समझते उँची जात ने अपने समाजी महत्व को बरकरार रखने के लिये इस पर सख्ती से पाबन्दी लगा दी मध्यकालीन युग में कई बीवियाँ रखना समाजी बुराई की निशानी थी। इस लिए इसका रिवाज ज्यादा बढ़ गया लेकिन निचले वर्ग के लोग आर्थिक परेशानियों से नहीं करते थे। वैदिक और महाकाव्य अदब से इसका सबूत मिलता है कि उस जमाने में कम उम्री में शादियां हो जाया करती थीं लेकिन इस समस्या में थोड़ा विरोधाभास भी है कि स्मृतियों के बारे में ''तिगलंका'' का लफ्ज मिलता है। जिससे कुछ शारहीन कम उम्री मुराद लेते हैं। कुछ ज्यादा उम्र में शादी करने का मतलब निकालते हैं। लेकिन यह बात सही है कि कुछ दिनों के बाद इस जमाने में कम उम्री की शादी का रिवाज बहुत ज्यादा हो गया था। ब्रह्म पुरान में तो यहां तक लिखा है कि चार साल की उम्र में ही लड़की की शादी की जा सकती है। आरम्भ में इस पर सिर्फ ब्राह्मणों के यहाँ अम्ल होता था। लेकिन बाद में यह चीजें तमाम जातों में प्रचलन में आ गयी।[19]

प्राचीन भारत में औरतों को एक समय में कई पति रखने का अधिकार था। कैलाश नाथ शर्मा ने लिखा है। भारत में द्रोपदी के अलावा और दूसरी मिसालें भी मिलती हैं। विभिन्न जमाने

में भी हालात के साथ समाजी कदरें भी परिवर्तित होती रही हैं। इसलिए वैदिक और महाभारत के जमाने में लोध समाज का बहुत बुलंद दर्जा नजर आता है। बुद्ध मजहब की नींव हालांकि ब्रह्मण धर्म के विरोध में थी फिर भी उन्होंने अपने यहाँ औरतों को ऊँचा मुकाम दिया और साथ ही औरतों को आला तालीम की इजाजत दी। बोध के जमाने में औरतों को फनूने लतीफा और दूसरी चीजों में हिस्सा लिया ''धर्म पाला तहरी गाथा'' "Dharampala theri Gatha" से पता चलता है कि इस जमाने में बहुत सी बोध भिक्षुओं ने कविता भजन कहे हैं। भिक्षनी जिनको तहरी कहा जाता था उनके गाने और भजन गाथा कहलाते हैं जो बुद्ध धर्म में शामिल कर लिये गये हैं।

''बोध धर्म ने जो इस्लाही तहरीक चलायी उस तहरीक में रहनुमा की हैसियत से बहुत सी औरतें शामिल थीं। गाथाओं में ऐसी औरतों का वर्णन बार–बार मिलता है। सोमा, अनुपमा, सुजाता, खिजा, चापा, सुन्दरी और बहुत सी औरतों के नाम बार–बार गीतों में नजर आते हैं। यह औरतें प्रचार का काम भी करती थीं। इससे स्पष्ट होता है कि बोध जमाने में सही मायनों में औरत का दर्जा मर्दों के बराबर था।''[20]

फन मौसकी में औरतों ने बहुत वृद्धि की। रानी लोक महादेवी ने मुसीकीकारों और रकाशाओं की सिर्फ सरपरस्ती ही नहीं की बल्कि रक्श व मोसीकी शिक्षा के लिये एक स्कूल कायम किया। जहाँ संगीत से प्रेम रखने वालों को इसकी फन्नी प्रशिक्षण दिया जाता था। सम्बीन महादेव को भी संगीत से बड़ा लगाव था। उन्होंने मंदिरों में भजन और पवित्र किताबों को सुर से गाने हिमायत की।

इस जमाने में औरतों ने यही काम नहीं किये घर के काम के अलावा धार्मिक प्रचार व प्रसार से लेकर फन तामीर तक में वह मर्दों के साथ बराबर हिस्सा लेती थी। दक्षिण में तीन रानियों ने दूसरी सही काफ मीस में दरियाये कृष्णा के किनारे कदीम स्तूप दोबारा तामीर कराये रानी लोक महादेवी ने सातवीं सदी में कांची का कैलाश मन्दिर का निर्माण कराया जो उस दौर की फने तामीर का एक बेहतरीन नमूना है। रानी और लोहरा के राजा की लड़की दादा ने बहुत से मंदिरों का निर्माण कराया। रानी लोक महादेवी ने बीजापुर में लोकेश्वर का मंदिर बनवाया। दिव्या का जिक्र राज तरनगनी में है कि उसने सारी उम्र मंदिरों के बनवाने में कर दी। कुन्दवी ने शिवा के विष्णु के मंदिरों को तामीर कराया। विजय लक्ष्मी पंडित ने एक जगह वैदिक और बोध जमाने की औरतों की हैसियत पर टिप्पणी करते हुये लिखा है किः–

''वक्त और जमाने की तब्दीलियों के साथ औरत की हैसियत में भी तब्दीलियां हुईं हैं। वैदिक जमाने में जबकि तहजीब बहुत मादी थी। जिन्दगी की बुनियाद खेतीबाड़ी थी और दौलत का तसव्वर गल्ला और कुत्तों से किया जाता था। औरत निस्बतन आजाद थी और कबीले में उसकी जगह का ताईन उसकी अहलियत से किया जाता था। वह जगह कबीले के कामों में हिस्सा बनाकर काम करती थी। ''बोध के जमाने में औरतों ने बहुत ज्यादा जहनी तरक्की की, उन्होंने तहजीबी कामों में अहम जगह हासिल कीं और इसलिये संस्कृत अदब और उस जमाने के ड्रामों में तालीम याफता

लोध औरतों का बड़ा अच्छा दर्जा है।''[21]

जैन दौर में औरतों की सभी आजादियाँ लोग सभ्यता की सी ही थीं। जैसी औरतें फनून–ए–लतीफा (हास्य कला) कविता, फन तामीर (निर्माण कला) में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेती थी। ऐ जैनी साहिबा जो कनड्डी जुबान की प्रसिद्ध कवि हुयीं कुछ औरतों ने कनडडी जुबान में प्रसिद्ध किताबें भी लिखी हैं।

जैनी युग में भी फन मसव्वरी (चित्रकारी) में हिस्सा लिया। एक विषाल भव्य मन्दिर बनवाया। यह निर्माण कार्य अपने जमाने के बेहतरीन नमूने हैं। इस जमाने में साधारण रूप में हास्य कला में औरतें ज्यादा दिलचस्पी लिया करती थीं जिससे उनके जौक व शौक में कोई रूकावट नहीं पड़ी।

प्राचीन काल में औरतों का हिन्दुस्तानी समाज में क्या क्या महत्व एवं सार्थकता थीं। अब तक इस जायजे से स्पश्ट रूप में प्रकट होती है कि हिन्दु धर्म जैन और बोध धर्म के अनुसार कितनी स्वतन्त्रता और पाबन्दियां थीं।

(आ) औरतों की पतनता के कारण सामाजिक एवं राजनैतिक

स्त्री सदैव कवित्व का विशय रही है। जिस किसी ने भी स्त्री पर कलम उठाया उसने औरत से ज्यादा अपने विशेष विचार और अपने हद तक खास अनुभवों को आधार बनाकर प्रस्तुत किया है जिसमें उसकी निजी सफलतायें असफलतायें और दूसरे दर्जे की अनुपमता अधिाक दिखाई देती हैं। उनकी वजह यह भी हो सकती है कि ज्यादा तर लेखक पुरूष हैं। इसलिए वे इनकी समस्याओं को गंभीरता से नहीं देख सकते और द्वैष ने उनके उद्देश्य को उलझाकर रख दिया। इसकी सबसे अच्छी मिसाल (LUDDLL, WL. GEORGE OTTO WEININGER) की पुस्तकों में मिलती हैं। इनकी किताबों में औरत की उन्नतियों और सफलताओं के बजाये निजी नुक्ते नजर पर ज्यादा है। इन किताबों के सम्बन्ध में ''जान लेंगडन डयूलिस ने लिखा है:–

''कि यह किताबें सही ईल्म के बजाये उपरी जानकारी और कारणों के बजाये अभिमान और घमण्ड पर आधारित हैं।''[22]

औरत की पस्ती व जवाल के कारणों में इन लेखकों और इस किस्म की किताबों को बड़ा महत्व प्राप्त है। इसलिये कि इन्होंने एक आम मिजाज और विचारधारा बनाने में मदद की है। औरत जिस्मानी रूप में कमजोर होती है और दूसरे जहनी रूप में भी मर्दों से कमजोर हैं। दूसरे जहनी तौर से मर्दों से कमतर होती हैं। तीसरे मिजाज के रूप में ऐतबार से बहुत जल्द परिवर्तित हो जाने वाली होती हैं। कुछ लोगों का तो यहाँ तक ख्याल है कि औरत एक पहेली है। इसको न तो कोई समझ सकता और न ज्यादा दिनों तक खुश रख सकता और चूँकि वह मर्द की सबसे बड़ी ख्वाहिश होती है इसलिए उसी के लिये सबसे बड़ा खतरा भी है। इसका वजूद सिर्फ बच्चों की परवरिश और घर के कामों के लिये हुआ इसके अलावा फितरी तौर

पर वह किसी काम के लिए योग्य नहीं। इन पश्चिमी साहित्यकारों के साथ हिन्दुस्तानी साहित्यकारों ने भी कई जगहों पर उनके ख्याल का समर्थन किया। ऐसे ख्यालात साधारणतयः शायराना और भादराई तसव्वराती हैं उनकी निगाहें औरत के इस शायराना मिजाज, नौजवान लड़के मार्च बेक्स से ज्यादा नहीं। जो जेम्बस मोर मारल से सिर्फ इस बात पर लड़ जाता है कि डंडा के हाथ प्याज काटे, जोनों पर मालिस करने और लैम्प में तेल भरने के लिये नहीं है। वह मावर्क के साथ खुद अपने को भी नेडडा का अहल नहीं पता। बल्कि कहता है कि हम दोनों को मगरिब और मशरिक की तरफ कनेडडा के लिये एक मुनासिब शौहर तलाश करने के लिये निकल जाना चाहिये। इसलिये कि मारल कनेडउा खेरे काम लेना था और मार्च बेक्स का ख्याल था कि वह काम करने के लिये नहीं बनाई गई है। इसी तरह हमारे बहुत से लेखकों का ख्याल है कि औरत में काम करने की सलाहियत ही नहीं होती यह बात उनके जज्बाती लगाव और षायराना मिजाज की निशानदेही करती है। बिल्कुल इसी तरह नियाज फतेहपुरी ने लिखा हैः—

''औरत के जिस्म व दिमाग की साख्त ही सिर्फ इसलिये नाजुक बनायी गयी है कि वह दुनिया के इन हंगामों में हिस्सा न ले सके जिसका मुकाबला करने के लिये सिर्फ मर्द वसीअ किया गया है। इसका काम उन खिदमात की परवरिश करना है जिसका ताल्लुक उस सकून से है न कि शोर हंगामे से है। अगर औरत मर्द के दोश बदोश तमाम मर्दाना मशागिल में हिस्सा लेने के लिये आमादा हो जाये तो हम नहीं कह सकते कि उनको पूरा नहीं कर सकती लेकिन यह जरूर है कि वह फितरत के खिलाफ चलने वाली कहलाई जायेंगी और कायनात का निजाम जिसमें नाजुक व करखत नर्म व इश्क दोनों पहलू बराबर रखे गये हैं। दरम व बरहम हो जायेंगे।''[23]

औरत की पस्ती का सियासी सबब सबसे ज्यादा अहम है। इसलिए कि इस ने सामूहिक रूप में औरत की जिन्दगी को प्रभावित है और यह कारण जंग है। औरत की खुशियों को किसी विचार ने इतना ज्यादा तबाह नहीं किया जितना मर्द की जीतने की ईच्छा ने क्योंकि मर्द तो जंगों में काम आ जाते हैं और जीतने वाली फौजें औरतों पर कब्जा कर लेती हैं। इस प्रकार औरत की जिन्दगी हमेशा के लिये खुशियों से वंचित हो जाती है। अगर हम किसी देश की सियासी इतिहास उठाकर देखें तो इसका अंदाजा होगा कि किस तरह जंगों का प्रतिक्रिया के रूप में औरतों का समाजी महत्व खत्म हो जाता है। स्वयं हिन्दुस्तान की तारीख जंगों के जिक्र से भरी पड़ी है। इन जंगों में मर्दों के कत्ल हो जाने के बाद औरतों को असभ्य जिन्दगी गुजारनी पड़ती थी। अगर वह जीतने वाले के अधिकार में आ जायें तो वह उनके साथ जिस तरह का भी व्यवहार करें उन्हें सहन करना पड़ता था जिस प्रकार की जिन्दगी गुजारने के लिये उनसे कहा जाता वह उसके लिए मजबूर थीं। दूसरी सूरत में अगर वह जीतने वाले के कब्जे में आने से बच जायें तो खुद उनका समाज उन्हें उनको पूर्व का महत्व देने को तैयार नहीं होता था। इस लिए हर जंग के बाद आम तौर पर पराजित देश में मर्दों कमी हो जाती है। ऐसी सूरत में जंग में काम आ जाने वालों की विधवाओं की शादी नहीं हो पाती थी। कम ही औरतें ऐसी होती थीं जिनका

खानदान उनके बोझ को बर्दाश्त कर लेता हो। इस सूरत में भी अगर वह अपने खानदान में रह गयीं तो उन्हें खराब जिन्दगी गुजारनी पड़ती थी। बाकी औरतों के लिए आर्थिक दशा पर काबू पाना मुश्किल हो जाता था और ऐसी सूरत में जिन्दा रहे और जिन्दगी की दूसरी जरूरयात को पूरा करने के लिये उन्हें जायज नाजायज काम करने पड़ते थे। वह किसी वेष्यालय में बदकारी की जिन्दगी गुजारें या किसी की रखैल की हैसियत से रहें। उनका समाजी दर्जा वही रहता था। जान लींगडन डेविस ने इस समस्या पर कि ''जंग औरत को किस तरह तबाह करती है। रौशनी डालते हुये लिखा है कि जंग चार तरीकों से औरत को बर्बाद करती है।

(1) अपने मर्दों के बिना बदकिस्मती से वह भूखों मरती हैं या मार डाली जाती हैं।

(2) उसकी फितरी जहानत खत्म हो जाती है।

(3) मर्दों की कमी की वजह से उसे जहाँ तमाम कामों में हिस्सा लेना पड़ता है।

(4) वहीं उसे खराब जिन्दगी गुजारने पर मजबूर होना पड़ता है।[24]

आम तौर पर तहजीबी और इखलाकी कदरें बिखर सी जाती हैं। फौजी सख्त मेहनत करने की वजह से अक्खड होते हैं। उनको इखलाकी और तहजीबी कदरों की कोई अहमियत नहीं होती। इसलिए शहरों पर चंद रोजा हुक्मरानी में अपनी पूरी बरबीयत और वहशीपन का सबूत देते हैं। साथ ही औरतें शायद बाजारी की जिन्दगी गुजारने पर मजबूर होती हैं जो उनकी सभी खुशियों और जिन्दगी के तमाम हुस्न खत्म कर देती हैं।

जागीरदाना अहद में चूँकि बगावतें और जगें ज्यादा हुईं इसलिए इस दौर में औरतों की कदरो मंजिलत कम नजर आती है। स्त्री का महत्व एक रूप में जरूरी था कि वह उनकी तफरीहो महफिलों का हुस्न और ऐश–व–इशरत का जरिया थीं। लेकिन इसके अलावा उसका कोई समाजी महत्व नहीं था। अगर औरत वैवाहित बीवी है। घर की चाहरदीवारी के अंदर घुट घुट कर मर जाना ही उसका मुकद्दर होता था। अगर वह वैष्या है तो उसकी जरूरत ऐष–व–इषरत की सभाओं तक सीमित थी। औरत के पतन के कारणों में यह एक बड़ी वजह है। कलीम उल्लहा ने लिखा हैः–

''अहद ऐ जहाँगीरदारी में बीवी का फर्ज उसी तरह था कि वह खानादारी के अमूर को अंजाम दे और सेविकाओं और लोडियों पर निगरानी करे। उन लोडियों से मर्द चाहते तो जिन्सी ताल्लुकात भी रख सकते थे लेकिन उनकी बीवियां हस्तक्षेप नहीं कर सकती थीं। हिन्दुस्तान में जहांगीर युग ने समाज में अमीर, जहांगीरदार और सभी उँची जाती के समाज में ज्यादातर यही शक्ल नजर आती हैं। वैश्या उस युग की सोसायटी का विशेष हिस्सा थी। जब तक घर में कई वैश्या न होती तब तक घर की षान न रहती। मर्दों का अधिकतर समय उन्हीं के पास बसर होता सारे ऐश व इशरत और दिलचस्पियों का केन्द्र बिन्दू यही रहता। उनकी शाईस्तगी और आर्टसटिक मजाक का शेहरा रहता और मर्द जिन्दगी की हर प्रकार की खुशी उनसे प्राप्त करते और अपनी सारी दौलत उनके कदमों में निछावर करते और यही जब अपने घर में होते तो बिल्कुल बाजरूरत

हाकिम बन जाते बीवी डरी सहमी उनका खैरमकदम करतीं और उस करमफरमाई पर ममनून और मशकूर होती।''[25]

समाज में जहाँ घर की औरतों का कोई महत्व नहीं था और मर्द वैश्याओं से दिल बहलाते थे। समाज में बहुत सी खराबियाँ पैदा कीं। यह खराबियां ऐसी थीं यह अनुभव तुरन्त नहीं किया जा सकता था। लेकिन इसने धीरे धीरे हमारी सभ्यता और व्यवहारिक चरित्र के आधार को कमजोर कर दिया। जब मर्द के जहन में औरत काबिले मुहब्बत या कशिश का कारण उसी वक्त हो जबकि वह तवाईफ हो जाये तो ऐसे समाज की इखलाकी हैसियत क्या होगी। वह औरतें जो ऐसे अमीरों और रोसाई की हवेलियों और महल सराओं में कैद रहती थीं। उन्हें मजबूरन बेराह रवी की जिन्दगी अख्तियार करनी पड़ती थी। इनकी ज्यादातर कृपा घर के बाहर रहा करती थी जो सराओं में कैद थी। इसलिये उनका लाजमी नतीजा रद्देअमल के तौर पर होता था कि घर की औरतें ऐसी बातों का षिकार हो जाती थी जिनकी मआशरे में औरत की कदरो मंजिलत और भी गिर गयी।

औरतों के पतन के कारणों में सियासी महरूमियों के साथ समाजी और धार्मिक बन्धनों का भी बहुत बड़ा हाथ रहा है। जागीरदाना वर्गों में औरतों और मर्दों के दरमियान जिन्सी तास्सुब ज्यादा स्पष्ट रूप में दिखायी देते हैं। दौलतमंद घरानों की औरतें जिनकी निगाह में जिन्दगी का असल उद्देश्य ऐश व इशरत है और जिनको उस वक्त के समाजी नुमाईन्दे कहा जा सकता है। स्वाभाविक रूप में खुषामंदी में जाती थीं। अपना ज्यादातर वक्त ऐसी तरीको और उन चीजों के प्रयोग पर खर्च करती थी। जिनसे वह अपने शौहरों को खुश रख सकें। इसलिये कि शौहर ज्यादातर दूसरी औरतों से दिल बहलाया करते थे। इधर घर की औरत के जहनों में बचपन से यह बात बसा दी जाती थी उनकी जिन्दगी का मकसद पति की पूजा है। इस इन्तहापसन्द शौहर परस्ती जज्बे ने औरत की खुद्दारी, वकार और किरदार को पतन का कारण बना दिया और इनमें अपने अनुपम होने का भाव, अपनी समस्याओं और अधिकारों के बारे में सोचने की योग्यता ही नहीं रही। औरतों की तरक्की में उनकी आर्थिक कमजोरियां सबसे बड़ी रूकावटें हैं। यह आर्थिक कमजोरियां भी इनकी पतन का बहुत बड़ा कारण है। चूँकि आर्थिक प्रतिश्ठा उनकी जिन्दगी का तमामतर दारोमदार पुरूषों पर होता था। इसलिए वह समाज में एक सुस्त अंग बनकर रह गयी। दूसरे परिवार का मालिक मर्द होता था। इस सोच ने भी औरतों की समाजी अवस्था को बहुत ज्यादा हानि पहुँचाई। चूँकि औरतों की जरूरयाते जिन्दगी सिर्फ मर्दों पर निर्भर थी। इसलिये उनकी सेवा करना उनके लिए आवष्यक थी।

सामूहिक परिवार के रिवाज ने भी औरतों की सामाजिक हैसियत को नुकसान बहुत पहुँचाया इसलिये कि सामूहिक परिवार में सिर्फ मर्द का महत्व होता था और मर्दों में भी वह खानदान में सबसे बड़ा हो। ऐसे खानदानों में औरत की इन्फरादियत और अहमियत नहीं थी। ऐसे में सिर्फ मर्द की खिद्मत करना और मर्दों की ज्यादतियों को बर्दाश्त करना था। बच्चों की

शादी या खानदान की विशेष बातों में भी उसकी कोई सहमति नहीं थी। मामूली मामूली बातों पर खानदानी झगड़े होते और सारा क्रोध औरत पर बरसता था। आम तौर पर वैवाहिक जीवन की थोड़ी सी खुशी भी उसके हिस्से में नहीं आती थी।

औरत के जवाल के कारणों में चन्द बातों को बहुत महत्व प्राप्त है। इनमें सबसे पहले बचपन की शादी का प्रचलन है। इस रिवाज से बहुत से समाजी और मआशरती नुकसान हुये अर्थात औरत बचपन की शादी की वजह से ईल्म जैसे नेमत से वंचित रही। एक समय में बाप बहुत छोटी छोटी लड़कियों के रिश्ते करा दिया करते थे इसकी वजह से अव्वल तो वह शिक्षा नहीं हासिल कर पाती थी दूसरे कम उम्र में ही बच्चे पैदा हो जाते थे। जिससे इसका असर उसके स्वास्थ्य पर पड़ता था और साथ ही उनके बच्चे जिसमानी और दिमागी रूप से अपने पूर्वजों से कम दर्जे के होते थे। जिससे देश की रफ्तार में अड़चन पैदा होती थी। डा० जाफरी हसन ने लिखा है कि:–

''बचपन की शादी की औलाद सेहत के ऐतबार से इतनी घटिया नहीं जितनी कि जानदारी के ऐतबार से होती है। अर्थात इसमें वह कुव्वत व ताकत नहीं हुई कि अपनी दिमागी और जिस्मानी काबलियत से पूरा लाभ उठाये वह होशियार और ज़हीन होते हुये निकम्मी होती है। वह अपनी ईश्वरीय प्रदान गुणों को कोशिश और स्थाई मिजाजी के बावजूद उजागर नहीं करती और अपनी सीरत की खूबियों की प्रवान नहीं चढ़ा सकती।''[26]

बचपन की शादियों से यह भी नुकसान होता था कि बहुत ज्यादा संख्या में छोटी छोटी लड़कियिां विधवा हो जाती थीं और चूँकि हिन्दु समाज में विधवाओं की शादी का कोई चलन नहीं था। अर्थात इन लड़कियों को अपनी जिन्दगी गुजारनी मुश्किल होती थी। इस बचपन की विधवापन और इन विधवाओं की शादी न होने के रिवाज नहीं होने के रिवाज ने औरत की तमामतर अनुपमता, अनोखापन एवं विशेषता को मिट्टी में मिला दिया। यह अभागिन और गरीब विधवायें समाज में अच्छी निगाह नहीं देखी जाती थीं और परिवार के लोग भी इनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। अर्थात यह अपनी रहने की जगह वेश्यालयों और बदकारी के अड्डों को बना लेती थीं। वहाँ पहुँचकर वह आर्थिक चिन्ताओं से छुटकारा पा लेती थीं और दूसरी तरफ उनको वक्ती तौर से थोड़ी सी तस्कीन मिल जाती थी। एक प्राचीन भारतीय विश्वास के अनुसार विधवायें अपने पति की मृत्यु की भागीदार हैं। यह आष्चर्य जनक व अजीबों गरीब विश्वास के रिवाज से अर्थात उसके पति को उसके पिछले जन्म के गुनाहों की सजा में वापिस ले लिया गया। इसलिए उसको दूसरी शादी करने की इजाजत नहीं दी गयी थी और घर में उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। यही कारण है कि ज्यादातर विधवायें विशेषकर नौजवान विधवायें वैश्यालयों में चली जाती थी। जहाँ कम से कम दुख दर्द भरी बातों से सुरक्षित रहती थीं। एक जर्मन अन्वेषक माहरे जिंसयात (Hurs chfeld) हर्ष फ्लेड कलकत्ता बनारस और बम्बई में अपने हिन्दुस्तानी दोस्तों के साथ वैश्यालय देखने गये वहाँ उन्होंने लड़कियों से वार्तालाप

की और उनके बारे में लिखा है किः–

''इनमें से ज्यादातर ने बताया कि वह इस पेशे में बेवा होने के बाद आई उस वक्त भी मेरे सामने एक बहुत खूबसूरत पुस्ता कद लड़की गोद में अपने बच्चे को लिये अपने कमरे की छत पर टहल रही है। मेरे हिन्दुस्तानी साथियों ने जब उससे पूछा कि वह यहाँ पर किस तरह पहुँची तो उसने बड़े इत्मीनान से जवाब दिया कि वह पंद्रह साल की उम्र में बेवा हो गई थी और बहरहाल उसे किसी न किसी सूरत से उसे अपने बच्चे का पेट पालना था।''[27]

इन बातों से यह बात सिद्ध हो जाती है। कि बचपन की षादी और विधवाओं की शादी न होना औरत के पतन का कारण है। इन दोनों बातों ने औरत की समाजी हैसियत को बिल्कुल खत्म कर दिया। समाज में इसका कोई महत्व नहीं रहा वह बिल्कुल लाचार व मज्लूम और मजबूर होकर रह गयी।

''औरत को समाज में बहुत सीमा तक उन खामियों के साथ कुचल दिया गया था हिन्दुओं का कहना कि पर्दा मुसलमानों का लाया हुआ है और मुसलमानों के डर से उन्होंने अपनी औरतों को पर्दा कराना शुरू किया।''[28]

इतिहास के अध्ययन से पता चलता है। वेदों के जमाने में यानि तकरीबन 400 क.म. में पर्दे का रिवाज था। इसके अलावा मनू ने हिन्दुस्तान के प्राचीन दस्तूर की पहली किताब में चौथी सदी पूर्व मसीह में लिखी गयी है। लिखा है किः–

''औरत का दिन व रात खानदान के मर्दों की देखभाल में घर के अन्दर रहना चाहिए बचपन उसके बाप को उसकी निगरानी करनी चाहिए। जवानी में उसके शौहर को बुढ़ापे में उसके लड़के को।''[29]

पर्दा वैदिक जमाने से षुरू हुआ था मुसलमान लाये लेकिन इसने जिस प्रकार यह चलन आम हुआ उस शक नहीं है कि औरत की तंजली (पतन) का सबब बनी। पर्दे की सख्त पाबंदी ने अगर एक तरफ उसकी सेहत पर असर तो दूसरी तरफ न तो मुल्क की तामीर के कामों के लायक नहीं पर्दे में बंद रहने की वजह से उसकी आर्थिक दशा भी खराब होती गयी। इसलिये कि वह कोई काम नहीं कर सकती थी। जिसके लिये उसे पर्दा छोड़ना पड़े। औरत की समस्या विभिन्न वर्गों में भिन्न–भिन्न धर्मों में अनेक प्रकार की हैं।

विभिन्न वर्गों और विभिन्न धर्मों में औरतों की समस्यायें अलग रही हैं। साध ाारणतया जो सबसे विशेष समस्या मध्यम और छोटे वर्गों में दिखायी पड़ती है। वह शिक्षा की समस्या मध्यम और निचले वर्ग में शिक्षा का अभाव होना बहुत बड़ा कारण है। इनमें पहला कारण आर्थिक कारण दूसरा कारण कम उम्र में शादी है। अशिक्षा के कारण से इन वर्गों के लोगों तक जागृति की लहर नहीं पहुँच सकी यही वजह है कि मर्दों में धार्मिक अंधविश्वास का अन्धापन समाजी रस्मों रिवाज के बन्धन का दखल बढ़ गया था और दूसरी तरफ शिक्षा न मिलने के कारण औरतों में जहनी बेदारी न पैदा हो सकी साधारणतया औरतों को अंग्रेजी शिक्षा दिलाना बुराई

समझी जाती थी। कुछ उँचे वर्ग के परिवारों को छोड़कर जिन्होंने पश्चिमी प्रचलन को स्वीकार कर लिया था। अन्य दूसरों घरों में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करना भटकने के बराबर समझा जाता था। एक शायर का कलाम उसके दौर की तारीख होती है। इसलिये इस सिलसिले में भी हमें कुछ शोयरा के यहाँ ऐसे इशारे मिल जाते हैं जो पाबन्दी की तरफ इशारा करते हैं। जैसे अकबर इलाहाबादी ने लड़कियों की अंग्रेजी हासिल करने पर कहा है।

लड़कियाँ पढ़ रही हैं अंग्रेजी
ढूँढ़ ली कौम ने फलाह की राह

दूसरी विशेष समस्या बेजोड़ शादी जो अधिकतर हर वर्ग में प्रचलित है। लड़कों को किसी हद तक अपनी पसन्द और नापसन्द का अधिकार है लेकिन लड़कियों के लिये जुबान खोलने की कोई गुंजाईश नहीं मां बाप जहाँ भी चाहें शादी कर दें। चाहें उन दोनों में जहनी इल्मी और मिजाजी समरूपता हो या न हो। इन बेजोड़ शादियों का प्रभाव पूर्ण समाज पर पड़ता है। वैवाहिक जीवन आम तौर पर खराब ही रहता है। कलीमुल्ला ने लिखा हैः—

''शादी के वक्त पर यह नहीं देखा जाता मर्द औरत के सनविसाल हुस्न व प्रतिभावान कई चीजें सामूहिक हैं। उनकी पसन्द का कोई सवाल काबिले गौर नहीं होता था सिर्फ यह देखा जाता था कि एक दूसरे की दौलत व सरवत और मुखकांती में कितनी वृद्धि है।''[30]

कभी कभी इन असमान शादियों का प्रभाव वैवाहिक संख्याओं की सूरत में जाहिर करता था। वैसे तो यह चीजें जागीरदाराना दौर की देन थी और कई बीवियां रखना प्रचलन या फैशन बन गया था लेकिन अक्सर बेजोड़ शादियों के कारण यह सूरतेहाल पैदा होती थीं। औरतों के लिये यह भी बड़ी समस्या थी। इसलिये औरतों के होने की सूरत में उनका वह खानदानी महत्व या समाजी हैसियत वह नहीं रह जाती जो होनी चाहिये थी बड़े तबकों में कई षादियां करने या विभिन्न औरतों से सम्बन्ध रखने की मिसालें ज्यादा मिलती हैं। अगर कुछ हालात में धार्मिक या कानूनी तौर पर कई शादियाँ करने की इजाजत न हो तो उनके लिये ''बाला खानों'' के दरवाजे खुले हुए थे। कुछ जगह इस वैश्या की शक्ल बिल्कुल दूसरी है जो कि बहुत ज्यादा इखलाक षोज है।''1

मेगनीस हर्श फेल्ड (Megnis Hurchfeld) ने हिन्दुस्तानी नारी की समस्या पर वार्तालाप करते हुये लिखा है।

''यहाँ आज भी बहुत से माता पिता अपनी लड़कियों की पैदाईश से पहले और पैदाईष के बाद देवियाँ समझते हैं। मातायें उनको बचपन ही में मन्दिरों में ले जाकर पुजिरियों के सुपुर्द कर देती हैं और पुजारिनें उनको ''देवी'' बनने की शिक्षा देती हैं। वह उन्हें नाच सिखाती हैं। गाना और पूजा पाठ की शिक्षा देती हैं।

यह नौजवान लड़कियाँ पुजारियों की बीवी की हैसियत से रहती थीं और ऐसा भी होता था कि वह मन्दिर की दौलत और तोहफे के रूप में दूसरे यात्रियों की तफरीह के लिए

भी पेश की जाती थीं। उस जमाने में इस बुराई के विरोध में बहुत ज्यादा आवाज उठायी गयी और वह यह ''मुकद्दश तवाईफ'' दकनी हिन्दु का उस वक्त सबसे अहम सवाल था।''[31]

औरत के लिए यह समस्या जितनी विशेष है उसका समाधान उतना ही दुश्वार, इस लिये इस सम्बन्ध में धर्म से और धार्मिक मामलों की इस्लाह करना इतना आसान नहीं।

नारी की समस्याओं में बहु संख्यक विवाह के पश्चात तलाक का हक आता है। सभी वर्गों में की नारियों की जिन्दगी की एक विशेष समस्या है। उसके लिए तलाक का अधिकार न होने के कारण से उन्हें हर प्रकार के पति के साथ गुजारा करना पड़ता है। चाहे वह कितनी ही खराब बीमारी में घिरा हो। चाहे वह अपने स्वभाव एवं आदत से कितना ही खराब क्यों न हो।

इसी के साथ नारियों की समस्या में दहेज की भी समस्या है। यह समस्या उँच वर्ग के लिये तो कोई विशेष महत्व नहीं रखती लेकिन मध्यम वर्ग के लिये और छोटे वर्ग के लोगों के वर्ग के लिए बहुत बड़ी समस्या है। अक्सर सिर्फ दहेज की रकम न होने की वजह से माता–पिता लड़कियों की शादी नहीं कर पाते हैं और उन्हें काफी उम्र तक बैठे रहना पड़ता है। उम्र ज्यादा होने की वजह से षादी करने वालों की मांग में इजाफा हो जाता है। जिसके कारण से कुछ वक्त शादियाँ नहीं हो पातीं या अगर हुईं तो बेमेल शादियां हुई इसलिए मजबूरन माता पिता नौजवान लड़कियों की शादियाँ बूढ़ों से करने पर सिर्फ इसलिये तैयार हो जाते हैं कि उनके पास दहेज में रूपये देने की हैसियत नहीं है। इस समस्या ने समाज में विभिन्न खराबियां पैदा कीं।

नारी के लिये एक समस्या यह भी थी कि उसे पति की जायदाद में कोई अधिकार नहीं मिलता था जिसकी वजह से पति की मृत्यु के बाद उसकी जिन्दगी बच्चों के रहमों करम पर होती थी या फिर उसको गुलामाना ढंग से जीनी पड़ती थी।

नारी की स्वतन्त्रता की कशमकश और आजादी के आन्दोलन में नारी की भागीदारीः–

यूँ तो हमेशा से नारियाँ विभिन्न इल्मी अदबी और समाजी मशागिल में दिलचस्पी लेती रही हैं और बहुत प्रसिद्ध औरतें सिर्फ यही नहीं कि अपने युग की मशहूर रही हैं बल्कि इनकी प्रसिद्धी इतिहास का हिस्सा बन गयी हैं जिन्होंने ऊलूम व फनून में दिलचस्पी भी ली बल्कि कुछ जमाने में देश की सियासत भी उनके हाथ में रही है।

मध्यवर्ती युग और मुगलीया दौर में औरतों को अपनी योग्यताओं को जाहिर करने के काफी अवसर मिले यह वह जमाना था जबकि निर्माण कला, संगीत चित्रकारी इत्यादि से लोगों को आम तौर से दिलचस्पी थी जिसकी तारीखी यादगारें आज भी केन्द्रित हैं। इस जमाने में बहुत सी औरतें ऐसी थीं जिन्होंने ऊलूम फनून में महारत हासिल कीं गवालियार के राजा मान सिंह की बीवी मर्गनैयना (1686–1515) संगीत में बहुत माहिर थीं। पन्द्रहवीं सदी में उसके बाद

मीरा बाई के गानों को बहुत शोहरत मिली। मीरा बाई के भजन आज भी उसी श्रद्धा और प्यार से सुने जाते हैं।

मुगलों के जमाने में मुसलसल हमलों ने औरतों की समाजी हैसियत को काफी मुतासिर किया। औरतों पर जंग के असरात किस तरह पड़ते हैं। इसका वर्णन कर चुके हैं लेकिन लड़ाई झगड़ों से जो आम नुकसानात होते हैं। उसके अलावा जो मुगलों के जमाने की लड़ाईयों में एक नुकसान यह भी हुआ कि औरतों की हैसियत गैर महफूज हो गयी। चूँकि आमतौर पर लूटमार के वाक्यात होते रहते थे। अर्थात बुद्ध के जमाने से औरतों का एक तबलीगी सिलसिला चला आ रहा था। वह खत्म हो गया। यह बुधभिकक्षीनी घुम घुम कर बुद्ध धर्म की तबलीग करती थी जो कि मुसलसल हमलों ने रास्तों को असुरक्षित बना दिया था। इसलिए वह हिमाकतें भी खत्म हो गयीं। दक्षिण भारत में नारियों की दशा कुछ ज्यादा अच्छी थी। शिक्षा का चलन भी औरतों में था। और स्थानीय भाषा के अलावा औरतें संस्कृत भी पढ़ती थीं। पानेकर ने लिखा है कि ''इस जमाने में बहुत सी औरतें शायरी करती थी। जिसमें चौदवी सदी इसवी में गंगा देवी नाम की एक औरत ने ''मध्यवाविजेयम'' नाम की एक रजमियां नज्म लिखी है। इसके अलावा तिरू आलियबा देवी और वजीजी भी दक्षिण भारत की प्रसिद्ध कवित्री हैं।''[32]

मुगलिया दौर की प्रारम्भिक लड़ाई भी वर्णन करने योग्य है। उसने हमायुँ नामा लिखा था जिसमें उस जमाने के हालात और बादषाह की जिन्दगी का वर्णन है। नूरजहाँ और शाहजहाँ की लड़की जहाँ आरा भी काफी महत्व रखती थी। औरंगजेब की लड़की जेबुल्लनिसा के नाम से परिचित हैं। वह फारसी की बेहतरीन शायरा थी। वह सभी उलूम व फनून से दिलचस्पी रखती थी। इन्हीं बुद्धिमता और तबाआती के कारण से उस जमाने में उसने हजारों दिलों पर हकूमत की। प्रशासनिक रूप में भी औरतों ने बड़े अहम कारनामें अंजाम दिये हैं रोदा अम्बा, रजिया सुल्ताना, चांद बीबी, तारा भाई, अहिल्या वाई इत्यादि उन ख्वातीन में हैं जो अपनी योग्यता के बलपर औरतों की तारीख में एक संगेमील की हैसियत रखती हैं। मुगलिया युग में नारियों ने हास्य कला और दूसरी कला एवं ईल्म में काफी दिलचस्पी ली। इसके बावजूद कहा जाता है कि हिन्दुस्तान की तरक्की में औरतों की भागीदारी बहुत कम है। यह दोष सही जरूर है लेकिन इसकी जिम्मेदारी औरतों पर नहीं थोपी जा सकती। औरतों से ज्यादा हिन्दुस्तानी समाज इसका ज्यादा जिम्मेदार हैं। स्वयं वैदिक युग में जिसके लिये कहा जाता है कि मर्दों और औरतों के मध्य कोई भेदभाव नहीं था लेकिन अम्ली हैसियत से इस जमाने में भी औरतों पर बन्धन नजर आते हैं। ऐसी पाबन्दियां जिन्हें समाजी रस्मों और धार्मिक अनिवार्यता का रूप दे दिया गया था। रस्में और बन्धन सदैव नारी की प्रगति में रूकावट बना रहा। दूसरा कारण औरतों की आजादी के पराक्रम में पीछे रह जायें या समाज के निर्माण में पूरी तरह भागीदारी न हो सके यह थी औरतों की सभी तरह से विवश करने वाली दशा जिसमें औरतों की राहें सीमित हो गयी थीं। यह दुशवारी पिछले कई सौ साल से जारी रही हैं। बचपन की शादी, शिक्षा की समस्या, सयासी अधिकारों से वंचित,

आर्थिक रूप में औरतें मर्दों पर निर्भर और विधवाओं की शादी इत्यादि चीजें थीं जिन्होंने औरतों को ऐसी कड़ी पाबन्दियों में कैद कर दिया था जिसका टुटना आसान नहीं था। सैकड़ों साल की जमी हुई गर्द को फूंककर साफ नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार औरतों को भी इन सैंकड़ों साल पुरानी पाबन्दियों और रिवायतों को दूर करने में काफी समय लगा। शिक्षा की प्रगति सुधार का आन्दोलन और उद्योगिक परिवर्तन ने जनता में बेदारी पैदा की और इन्हीं औरतों की आजादी और उनके अधिकार का अहसास है। दूसरी तरफ औरतों ने भी एकत्रित एवं व्यवस्थित रूप में अपनी कोशिशें शुरू कीं। देवकालीन में औरतों की समाजी और सभ्य जिन्दगी और उनके हालात की तबदीली और उसके कारणों पर रोशनी डालते हुए लिखा है किः–

''पहली सबसे अहम वजह वह समाजी एवं तहजीबी तब्दीलियां हैं। सनअती इंकलाब के सिलसिले वजूद में आयें उन्होंने खानगी जिन्दगी में औरत की हैसियत को बदल दिया। दूसरे उन्नीसवीं सदी में साईन्स ने ऐसी तरक्कियां कीं कि जिसने न सिर्फ यह कि इंसान के मैदाने अम्ल को बड़ी हद तक आगे बढ़ाया बल्कि उसने आम नजरयात को वसअत भी दी। एक ऐसी ख्वाहिश पैदा की जिससे तमाम मसाईल का साईन्सी अंदाज में तजजिया किया जाने लगा।''[33]

उद्योगीकरण परिवर्तन और उन्नीसवीं सदी की साईन्सी प्रगतियों बड़ी हद एक जन्सी जिद को कम कर दिया जो मर्दों में औरतों के लिये पाये जाते थे। वैसे अठारहवीं सदी के आखिर तक कुछ ऐसी घटनायें इन देशों में नजर आते हैं जो सभ्यता एवं एकता के केन्द्रों में गिने जाते हैं। जिससे औरत की समाजी दशा और पारिवारिक महत्व पर रोशनी पड़ती है कि उन्हें इन प्रगतिशील देशों में भी आदर व सम्मान की नजर से नहीं देखा जाता। अठारहवीं सदी के आखिर तक औरतों को बेचने का रिवाज आम था। आज हम कदीम देषों की सभ्यता एवं दषा पर आपत्ति करते हैं कि जमाने में औरत की कोई हैसियत नहीं थी। उन्हें मार डालना उनका अधिकार होता था और वह तमाम लोग ऐतराजात का हदफ ले रहे हैं लेकिन यह तारीखी प्रमाण इस बात को साबित करते हैं कि कदीम औरत यकीनन एक हद तक अठारहवीं सदी और उन्नीसवीं सदी की औरत से बेहतर थी। इसलिये कि भेड़ बकरियों की तरह उनका कारोबार नहीं होता था।

Mary Wall Stone Craft - इंगलैन्ड की पहली औरत जिसने सबसे पहले औरत के बारे में लिखा और उनकी हमदर्दी में आवाज उठाई उसने अपनी अहम किताब "Vindication of Right of Women 1792 ई० में लिखा है। इसने लड़कियों की शिक्षा को समस्या पर 1786 ई० में एक किताब लिखी इस तरह इस पूर्व का अंदाजा होता है। हालात औरतों के लिये साजगार नहीं थे और उनकी कोई तंजीम भी नहीं थी। लेकिन इन हकूक और उनकी आजादी की जद्दोजहद के सिलसिले में लिखा जाने लगा था।

हिन्दुस्तान में भी दूसरे देषों के प्रभाव के अनुसार यह आन्दोलन शुरू हुई और धीरे धीरे समाजी रस्मो–रिवाज एवं धार्मिक बन्धनों के विरोध औरतों में एक कशमकश जाहिर हुई पश्चिम के मुकाबले में हिन्दुस्तानी औरतों का सम्बन्ध धर्म से है। इसलिए इनमें नये रूजहानात

का पैदा होना या उनके लिये नयी बातों का फौरी तौर पर कबूल करना आसान काम नहीं था। कैलाश नाथ शर्मा ने लिखा है किः–

''1854 ई० में सर चार्ल्स वुडस ने अपने मशहूर खत में औरतों की तालीम पर जोर दिया है बाद में आर्य समाज, ब्रह्म समाज ने तालीम निस्वाँ की अहमियत पर जोर दिया है। 1866 ई० में और 1886 ई० के बीच ईसाई मिषनरियों ने भी इसमें मदद दी इन अंजुमनों ने औरतों की तरक्की और आर्थिक आजादी की बुनियाद डाली। कुछ हिन्दुस्तानी औरतों ने भी औरतों की तरक्की में बहुत काम किये। इनमें रामबाई, रूकमा वाई, रमावाई, रानाडे के नाम काबिले जिक्र हैं।

ईश्वर चंद विद्या सागर और पूना के प्रोफेसर कारवैये ने विधवा आश्रम खोले पारसियों ने विभिन्न किस्म की शिक्षा देने में सबसे पहले कदम उठाया। इंडियन नेशनल सोशल कांफ्रेंस ने औरतों की उन्नति के लिये विभिन्न प्रकार के काम किये।''[34]

सर सय्यद ने 1870 ई० से तहजीबुल्इखलाक निकालना शुरू किया ताकि इसके द्वारा आम मुसलमान औरतों और मर्दों तक शिक्षा का महत्व एवं सभ्यता की कदरों को पहचाना जा सके उन्होंने इसके पहले शुमारे में लिखा हैः–

''हिन्दुस्तानी मुसलमानों को कामिल दरजे की सिवलाईजेशन यानि तहजीब अख्तियार करने पर रागिब किया जाये ताकि जिस हकारत से सिवलाईजड यानि मजहब कौमेंइन को देखती हैं। वह रफीह हो और वह दुनिया में मौजज और मोहज्जब कौम कहलायें।''[35]

सर सय्यद ने तहजीबुलइख्लाक में औरतों की तालीम कसरत अजदवाज, रफाहे औरत इत्यादि विषयों पर कई लेख लिखे सरसय्यद तहरीक के असर के तहत बहुत जल्द एक माकूल और रोशन ख्याल मुसलमान हल्का पैदा हो गया जिसने आम तुसलमानों की तालीम के साथ–साथ औरतों की तालीम व इस्लाह पर भी खसूसयात के साथ जोर दिया। अली गदही में 1904 ई० पहली औरतों की आयोजित हुई जिसके बानी अब्दुल्ला साहब थे। जिसमें औरतों की आजादी और शिक्षा के सिलसिले में बहुत से फैसले किये गये। उस वक्त हिन्दुस्तान में अतिया, फैजी, आबरू बेगम, आलाबी, मिसिज रज़िया अल्लाह, सईद अहमद बेगम और सुलतान बेगम खाये भोपाल जैसी तरक्कीयाफ्त ख्वातीन मौजूद थीं।

1904 ई० में औरतों की तालीम को तहरीक को आगे बढ़ाने के लिये खातून के नाम से एक रिसाला जारी किया गया कुछ समय बाद अलीगढ़ में औरतों की तालीम के लिए अब्दुल्ला साहिब ने बाकायदा स्कूल कायम किया जो वैमंस की षक्ल में आज भी मौजूद है जिसके बाद रफ्ता रफ्ता सारे मुल्क में औरतों की तालीम आम होने लगी।

हिन्दुस्तान की आजादी में गोया कि औरतें शरीक थीं लेकिन आम तौर पर वह तमाम आंदोलनों में हिस्सा नहीं ले सकती थीं इसलिये कि उस वक्त तक ऐसी जगह उन्हें भेजने में ऐहतयात की जाती थी कि जहाँ पर भेजने से किसी तकलीफ का अन्देशा हो। कमला देवी ने लिखा है किः–

''पहले गांधी जी ने कुछ सोचकर औरतों को आम तहरीक में भाग लेने के लिये आज्ञा नहीं दी थी। लेकिन जब यह तहरीक बहुत विस्तार में आ गयी तो उन्होंने पहली बार कुछ चुनिन्दा औरतों को नमक सत्याग्रह में भाग लेने की आज्ञा दे दी जिससे हिन्दुस्तानी परिवर्तन की शुरूआत हुई। यह सत्याग्रह 6 अप्रैल 1930 ई० की सुबह को शुरू हुई और उसी दिन सूरज के छिपने के वक्त तक आम जनता का आन्दोलन बनकर सारे देश में फैल गयी।''[36]

भारतीय नारी जो हमेशा से चारदीवारी के अन्दर कैद थी और जिसकी दुनिया उसके घर के कमरे के अन्दर सीमित थी उसने हिन्दुस्तान की जंगे आजादी की कशमकश में हिस्सा लेने के लिये अचानक अपनी इस सदियों पुराने पर्दे को उतार फेंका महात्मा गांधी ने लिखा है किः–

''जंगे आजादी में हिन्दुस्तानी औरतों ने जो काम किया है। वह सुनहरे शब्दों में लिखा जायेगा।''[37]

इन तमाम औरतों को इस बात का यकीन हो गया था कि उनकी जिन्दगी उनकी आजादी और उनकी उन्नति एवं विकास हकुमत के खात्मे में है। भारतीय नारियां इस कशमकश में मर्दों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर न होतीं तो यह आन्दोलन को सफलता संभव नहीं थी। औरतों के सेवा दल कैंप इनके सयासी कामों की ट्रेनिंग के लिये सारे देश में खोले गये। 1931 ई० के शुरू में जब इंडियन नेशनल कांग्रेस का जलसा कराची में हुआ तो उसमें औरतों को बहुत बेबुनियादी और दस्तुरी हकूक देने का ऐलान किया गया। इंडियन कांग्रेस के ऐलान से हिन्दुस्तानी औरतों की जिन्दगी का एक नया बाब शुरू होता है और खसूसीयत इसकी यह है कि कुछ और औरतों की आजादी के सिलसिले में बहुत ज्यादा महत्व रखता है। इंडियन नेशनल कांग्रेस के ऐलान नामे में कहा गया था किः–

''जिन्स के इखतलाफ पर कोई तखसीस नहीं बरती जायेगी।''

हिन्दुस्तानी विचारकों ने सबसे पूर्व समाजी परिभाशाओं पर विचार किया और उन विचारकों और सुधारवादियों में द्वारिका नाथ, रविन्द्र नाथ टैगोर और राजा राम मोहन राय इत्यादि बहुत ज्यादा महत्व रखते हैं। इन लोगों ने सती की इंसानियत सोज रस्म को तोड़ने की हर प्रकार से कोशिश की उन्होंने अपनी तहरीरों और तकरीरों के द्वारा लोगों को यह समझाया कि सती की रस्म धार्मिक कमजोरी है यह रिवाज आम तौर पर धनी वर्ग में प्रचलित था।

औरतों की समाजी सुधारवादी के सिलसिले में ईश्वरचन्द विद्यासागर और उनके दूसरे साथियों ने भी बहुत कोशिश की। इन लोगों ने सरकार को इस बात पर मजबूर किया कि वह विधवाओं की शादी करने का कानून बनाये इन सुधारों से औरतों में जागृति पैदा होगी।

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन महात्मा गाँधी की अगुवाई शुरू हुआ था। उसने धीरे–धीरे औरतों को प्रचलित पाबन्दियों से निकाला और पुरूषों के कन्धे से कन्धा मिलाने के लिए खड़ा किया इन नारियों में प्रारम्भ में केवल वही औरतें थीं जो उन बड़े नेताओं के परिवारों से सम्बन्ध रखती थीं। लेकिन उनका इस प्रकार की क्रियाकलापों में भाग लेना ही बड़ी बात थी।

जिसे देखकर सभी नारियों में इस जद्दो जहद में भाग लेने की ईच्छा उत्पन्न हुई और वह भी धीरे–धीरे इसमें शामिल हो गयीं डा० जफर हसन ने लिखा हैः–

''महात्मा गांधी की कयादत में 1920 ई. जो आन्दोलन शुरू हुई थी। उसमें सभी प्रमुख नेताओं की रिश्तेदारनियाँ भी शामिल हुई थीं। कस्तुरबा गाँधी, मोती लाल नेहरू की पत्नी और उनकी बेटियां खासकर विजय लक्ष्मी पंडित मिसज नायडू और कमला देवी और उनके अलावा हजारों बहनें लाखों औरतें और लड़कियों ने देश के विभिन्न हिस्सों से राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा लिया, मुसीबतें सही, आराम कुर्बान किया लाठियां खायी भूखी रहीं जेल की सजा भोगी और हजारों ने खामोशी के साथ भारत माता की आजादी के लिए कुर्बानी देने पर मजबूर हुयीं।''[38]

इससे यह प्रमाणित होता है कि किसी प्रकार दासता की जंजीरों के बंधन में बंधे और धार्मिक प्रतिबन्धों के बावजूद नारियों ने अपने अधिकारों एवं अपने देश की आजादी के लिए उन सभी प्रतिबन्धों से मुक्त होकर सभी प्रकार रूकावटों को नष्ट करके आगे से आगे बढ़ती गयीं।

भारतीय नारी की इस बहादुरी और बलिदान की भावना से प्रभावित होकर महात्मा गांधी ने 1932 ई. में पेरिस एवं स्वीजरलैण्ड में यह बात कही थी किः–

''मैं यूरोप की औरतों को यह पैगाम दे रहा हूँ कि उन्हें हिन्दुस्तानी औरतों की पैरवी करनी चाहिए जो पूर्व वर्ष में जन आन्दोलन के लिए उठ खड़ी हुयीं और मुझे पूर्ण विश्वास है कि अगर यूरोप की औरतें अहिंसा से सबक लें तो उन्हें सकून और शान्ति प्राप्त हो सकती है।''[39]

गांधी जी ने भारतीय नारियों के स्वतंत्रता एवं विकास के लिए बहुत अच्छे काम किये। जाहिर है कि नये हिन्दुस्तान का भविष्य निर्माण करने वाले वही थे वह इस बात को अच्छी तरह समझते थे। नया हिन्दुस्तान उस वक्त तक कामयाब एवं खुशहाल नहीं हो सकता जब तक औरतों की आजादी और उसके अधिकारों को उन्हें दे दिये जाएँ। उन्हें एक मददगार और साथी की जरूरत है जो उनको उस अंधेरे कुएं से निकाल सके जिसमें उन्हें अब तक रखा गया है। छोटी छोटी बातों के परिणाम बहुत आश्चर्यजनक प्राप्त हुये हैं। ''जैसे 1931–32 के सत्याग्रह में नारियों ने विशेषकर भाग लिया और उसके पष्चात भी वह बड़ी खूबी के साथ अपना कार्य करती रहीं हैं। अगरचे उनके बीच में विकास का कार्य सही रूप में नहीं हुआ। इसलिये उनकी एक अच्छी संस्था और उनमें संगठित आन्दोलन की आवष्यकता है।''[40]

भारत में 1935 ई० में समाजी और सियासी परिभाषायें हुईं जिनके अनुसार नारी के अधिकारों में कुछ और वृद्धि हुईं। 1925 ई० में औरतों को वोट देने का अधिकार तो प्राप्त हो गया था। 1936 ई० में बहुत सी औरतें असैम्बली की मेम्बर की हैसियत से चुनी गयीं और उनमें से कुछ वज़ीर और डिप्टी इन्सपेक्टर की जगह भी प्राप्त कीं अब औरतों का सुधारवादी आन्दोलन ज्यादा तेजी के साथ बढ़ता जा रहा था। एक तरफ इस बात का भी विश्वास हो गया था कि अब हिन्दुस्तान में भी ज्यादा दिनों तक विदेशियों की सत्ता नहीं चल सकती। अतः एव 1935 ई. के नये दस्तूर ने हिन्दुस्तानी औरतों को और भी ज्यादा अधिकार दिये जो इस समय में औरतों

ने मर्दों के बराबर अधिकार पाने की मांग भी की थी। एक खास एक्ट पारित हुआ जिसे Hindu Women's Right to Property Act कहा जाता है। इस एक्ट के अनुसार औरतें कुछ आर्थिक अधिकार भी मिल गये और औरत को पति की जायदाद में हिस्से में इसका हिस्सा जरूरी करार दिया गया।

महात्मा गांधी ने अपनी व्याख्यानों और लेखों के जरिये हिन्दुस्तान के पुरुषों से इस बात की प्रार्थना की कि वह नारी गुलाम समझने के बजाये दोस्त साथी और हमदर्द समझें और उसे समान अधिकार दें ताकि उनकी जहनी और दिमागी कुव्वतें सामने लायें और देश की उन्नति की राह में पुरूषों के साथ साथ हों।

हमारे कवियों और संतों, सफियों ने हमेशा औरतों की तारीफ की है। जैसा कि एक जगह स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है किः–

''वो मुल्क और वो कौम कभी बुराई और अच्छाई की मेराज को नहीं पा सकती जो औरतों की इज्जत नहीं करती। औरतों को तो भूत में सम्मान मिला और यह भविश्य में मिलेगा। आज–कल तुम्हारी नस्लों के पतन होने का कारण सबसे बड़ी वजह है कि तुम में ''इन जिन्दा कुव्वतों'' (Living Images of Shakti) के लिये इज्जत नहीं रह गयी है।''[41]

स्त्रियों की इस आधुनिक युग में कशमकश के अनुसार भारतीय नारियों में अनुपम परिवर्तन हुईं। नारियों ने शैक्षिक आन्दोलन में भाग लिया। स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद अदबी क्षेत्रों में शोहरत पैदा की और अपने फन पारों से अदब में अनमोल वृद्धि की है। शिक्षा का यह आन्दोलन चूँकि बंगाल से शुरू हुआ था। इस बंगाली साहित्य में औरतों की भागीदारी दिखायी देती है। रविन्द्र नाथ टैगोर की बहु सोरण कुमारी देवी बंगाल की पहली नाविलनिगार खातून हैं। संक्षिप्त कहानियों, अफसानों और नाविल निगारी में आशा लता, आशापूरी देवी और लैला मजुमदार इत्यादि को भी बंगाली अदब में काफी महत्व प्राप्त हुआ है। हिन्दी भाषा से भी बहुत सी नारियां अदीबों और शायरों को उत्पन्न किया हिन्दी में ओमवती देवी, ऊषा देवी, कृष्णा साहा, सतवती मलिक और महादेवी वर्मा के नाम काफी महत्वपूर्ण हैं। हिन्दुस्तानी भाषाओं में उर्दू का काफी महत्व रहा है और उर्दू ने हिन्दुस्तान की जंगे आजादी की जदो जहद से भरा दौर था। उर्दू के बेहतरीन अदीबों, शायरात में बहुत सी औरतों के नाम दिखायी देते हैं। जिन्होंने विभिन्न गद्य व पद्य विधाओं में कामयाब रचनायें पेश की हैं। उर्दू नाविल निगारी और अफसाना निगारी के सिलसिले में नजीर हैदर, हिजाब इम्तियाज अली, डा० रशीद जहाँ, इस्मत चुगताई, कुर्तुल्लऐन हैदर, साल्हा आबिद हुसैन, रजिया सज्जाद जहीर, मुमताज शीरीं, हाजरा मसरूर, खदीजा मस्तूर इत्यादि के नाम हमारी अदबी तारीख का महत्वपूर्ण भाग हैं। उर्दू शायरों की सारणी में बहुत सी औरतों के नाम दिखायी देते हैं। यह इत्तिफाक है कि कोई इतनी प्रसिद्धी प्राप्त नहीं कर पाया जो पुरूषों को प्राप्त हुयीं। लेकिन इसके बावजूद उनकी अदबी जज्बात से इंकार नहीं किया जा सकता। शायद इसका कारण पर्दा रहा होगा या औरत होने की मजबूरी हो या हुस्न की वजह

से न तो वह आम मर्द षौयरा से घुल मिल सकती थीं और न ही मुशायरों में शरीक हो सकती थीं। लेकिन इसके बावजूद इनकी साहित्यिक सेवा से इंकार नहीं किया जा सकता। दकिन चूँकि उर्दू षायरी का पहला केन्द्र रहा इसलिये यहाँ कदीम जमाने से औरतें कवियों की अच्छी खासी संख्या है। डा० नसीरुद्दीन हाशमी ने लिखा है कि ''उर्दू की पहली साहिबे दीवान खातून षायर लुत्फुल्लूनिसा इम्तियाज थीं। इनकी परवरिष षाही खानदान में हुई इनका तख्लुस मालिबन लुत्फ था। बाद में इम्तियाज हुआ। 36 साल की उम्र में 1212 ई. में इनका दीवान प्रकाशित हुआ।''[42]

इस प्रकार धीरे–धीरे औरतें जिन्दगी के हर क्षेत्र में दिखायी देने लगीं और बहुत बड़ी सीमा तक लिंग विरोध का बटवारे का तरीका खत्म हो गया। आजकल पश्चिमी देशों की तरह हमारे देश में भी कोई भी क्षेत्र और कोई भी पेशा ऐसा नहीं मिलेगा जिसमें सिर्फ जिन्स विरोधी आधार पर औरतों को लेने से मना कर दिया जाये। पश्चिमी देशों में औरतें उद्योग धन्धे, दफ्तरों और हर प्रकार के कामों पर छायी हुई हैं। हमारे देष में कुछ दुश्वारियां थीं शिक्षा की सहुलतें कम होने के कारण अभी भी कुछ खामी हैं लेकिन फिर भी हर क्षेत्र में अपनी योग्यताओं को प्रमाणित कर रही हैं। आजादी के बाद और तेजी से वृद्धि हो रही है और हर कार्य को बड़ी कुशलतापूर्वक करके, विशेष प्रभाव प्रस्तुत करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ–

1 *रियासत – अफलातून अनुवादक डा० हुसैन हसन 276 पृ० प्रथम एडीसन*
2 *रियासत – अफलातून – अनुवादक डा० हसैन हसन – पहला एडीसन पृ० 277*
3 *रियासत – अफलातून – अनुवादक डा० हसैन हसन – पहला एडीसन पृ० 289*
4 *''रियासत'' अफलातून अनुवादक डा० हुसैन पृ० 289*
5 *ट्राईलस इन साऊथ अफ्रीका – बहवाला नियाज फतेहपुरी गहवारा तमद्दुन – पृ० 44*
6 *हमदर्द सेहत औरत नम्बर 1937 ई० पृ० 176*
7 *गहवारा तमद्दुन – नियाज फतेहपुरी – दूसरा एडीसन पृ० 101*
8 *R.K. Phukarja : Women of India " Page - 1*
9 *Prof. Indra – The Status of Women in Ancients India Page 3*
10 *R.K. Mukarji "Women of India" Page 2-3*
11 *भारतीय समाज और संस्कृत – लेखक – कैलाश नाथ शर्मा शास्त्री पृ० 204*
12 *पेश लफ्ज गहवारा तमद्दुन – नियाज फतेहपूरी – पृ० 27*
13 *Prof – Indra "States of Women in Ancient India Page 13*
14 *भारतीय संस्कृति एवं समाज – कैलाश नाथ शर्मा – पृ० 204*
15 *भारतीय समाज एवं संस्कृति – कैलाश नाथ शर्मा शास्त्री – पृ० 205*
16 *Prof Indra The status of women in Ancient India – Pg - 7*
17 *Prof Indra The status of women in Ancient India – Pg - 15*
18 *Prof Indra The status of women in Ancient India – Pg - 15*

19 भारतीय समाज और संस्कृति – कैलाश नाथ शर्मा – पृ० 159
20 R.K. Mukharji, Women of India – Pg 8
21 Vijay Lakshmi Pandit, "Introduction, The status of women ancient of India pg 23
22 J.L. Davies, A Short History of Women Pg – 15.
23 गहवारा तमदुन – नियाज फतेहपूरी – पृ० 245
24 J.L. Davies, A Short History of Women Pg 20
25 का इर्तका – कलीमुल्ला पृ० 121–122
26 हिन्दुस्तानी समाजियात – डा० जाफर हुसैन – पष्० 63
27 M. Kurshfeld, "Women East And West Pg - 167
28 M. Kurshfeld, "Women East And West Pg - 160
29 M. Kurshfeld, "Women East And West Pg - 161
30 समाज का इर्तका – कलीमुल्ला – पृ० 126
31 M. Hursh feld, "Woman East And West Pg 150-151
32 M. Hurrti feld, "Women of India" Page 10
33 Vislakiwin "The Faminer Character Pg 6
34 भारतीय समाज और संस्कृत – कैलाश नाथ शर्मा – पृ० 211
35 भारतीय समाज और संस्कृत– कैलाश नाथ शर्मा – पृ० 211
36 कमला देवी चटोउपाध्याय वुमैन ऑफ इंडिया – द्वारा तारा अली वेग – पृ० 18
37 वुमैन आफ इंडिया – पृ० 19
38 हिन्दुस्तानी समाजयात – डा० जाफर हसन, पृ० 147
39 Amnikaur Preface women & Social Injustice by M K Gandhi
40 Amnikaur Preface women & Social Injustice by M K Gandhi
41 M. K. Gandhi : Women and
42 M. K. Gandhi and Social Injustice Pg 11-12